31-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - शिवबाबा को यह भी लालसा नहीं कि बच्चे बड़े होंगे तो हमारी सेवा करेंगे, वह कभी बूढ़ा होता नहीं, बाप ही है निष्काम सेवाधारी"

प्रश्नः भोलानाथ शिवबाबा हम सब बच्चों का बहुत बड़ा ग्राहक है - कैसे?

उत्तर: बाबा कहते मैं इतना भोला ग्राहक हूँ, जो तुम्हारी सब पुरानी चीज़ें खरीद कर लेता और उसके रिटर्न में सब नई-नई चीज़ें देता हूँ। तुम कहते हो बाबा यह तन-मन-धन सब आपका है तो उसकी एवज़ में तुम्हें ब्यूटीफुल तन मिल जाता, अपार धन मिल जाता।

गीत:-भोलेनाथ से निराला.. Click

भोलेनाथ से निराला
गौरीनाथ से निराला
कोई और नहीं
हो..ओ..ओ
भोलेनाथ से निराला
गौरीनाथ से निराला
कोई और नहीं
ऐसा बिगड़ी बनाने
वाला
कोई और नहीं
भोलेनाथ से निराला
गौरीनाथ से निराला
कोई और नहीं
हो..ओ..ओ
भोलेनाथ से निराला
गोरीनाथ से निराला
कोई और नहीं

उनका डमरू डम डम
बोले
अगम निगम के भेद
खोले
उनका डमरू डम डम
बोले
अगम निगम के भेद
खोले
ऐसा भक्तों का
रखवाला
कोई और नहीं
भोलेनाथ से निराला
गौरीनाथ से निराला
कोई और नहीं
हो..ओ..ओ
भोलेनाथ से निराला
गोरीनाथ से निराला
कोई और नहीं

काया जब जब करवट
बदले
काप चमकते अगले
पिछले
काया जब जब करवट
बदले
काप चमकते अगले
पिछले
ऐसा जोग जगाने वाला
कोई और नहीं
भोलेनाथ से निराला
गौरीनाथ से निराला
कोई और नहीं
हो..ओ..ओ
भोलेनाथ से निराला
गौरीनाथ से निराला
कोई और नहीं

तूने जग का कष्ट
मिटाया
मुझको स्वामी क्यों
बिसराया
तूने जग का कष्ट
मिटाया
मुझको स्वामी क्यों
बिसराया
अब तो मुझे बचाने
वाला
कोई और नहीं
भोलेनाथ से
निराला
गौरीनाथ से निराला
कोई और नहीं
हो..ओ..ओ
भोलेनाथ से
निराला
गौरीनाथ से निराला
कोई और नहीं

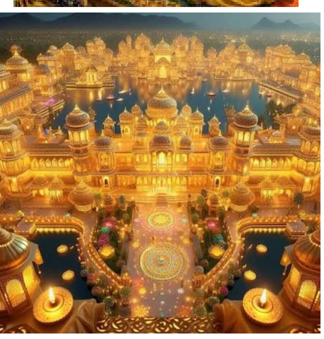

ओम् शान्ति। यह भक्ति मार्ग में गीत गाते हैं। जो भी गीत हैं सब भक्ति मार्ग के हैं, उनका भी अर्थ बाप समझाते हैं। बच्चे भी समझ जाते हैं कि भोलानाथ किसको कहा जाता है। देवताओं को भोलानाथ नहीं कहेंगे। गाया हुआ है सुदामा ने दो मुट्ठी अन्न की दी तो महल मिल गये। तो भी कितने समय के लिए? 21 जन्म के लिए। अब बच्चे समझते हैं कि बाप आकर के भारतवासियों को बरोबर हीरे-जवाहरों के महल देते हैं। किसकी एवज़ में देते हैं? बच्चे कहते हैं बाबा यह तन-मन-धन सब आपका है। आपका ही दिया हुआ है। किसको बच्चा पैदा हुआ तो कहते हैं भगवान ने दिया। धन के लिए भी कहते हैं भगवान ने दिया। कहने वाले कौन हैं? आत्मा। भगवान अर्थात् बाप ने दिया। बाप कहते हैं - सब कुछ तुमको अब देना होगा।

हाँ जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

उसकी एवज़ में हम तुमको बहुत ब्यूटीफुल तन ट्रांसफर कर देंगे, अपार धन देंगे। लेकिन किसको देंगे? जरूर बच्चों को ही देंगे। लौकिक बाप से अल्पकाल के लिए धन मिला है। बेहद का बाप हमको बेहद का वर्सा देंगे। बाप समझाते हैं

31-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ज्ञान और भक्ति में रात-दिन का फ़र्क है। भक्ति में अल्पकाल के लिए मिलता है। धन है तो सुख है। धन के बिगर मनुष्य कितने दु:खी होते हैं। बच्चे जानते हैं बाबा हमको अथाह धन देते हैं इसलिए खुशी होती है। सुखधाम में तो सुख की कोई कमी नहीं। हर एक को अपनी-अपनी राजधानी है। उसको कहा जाता है पवित्र गृहस्थ आश्रम। तो बाप कितना भोला है, क्या लेते हैं और क्या देते हैं! कितना अच्छा ग्राहक है बाप! यूँ भी बच्चों का तो बाप ग्राहक ही है। बच्चा पैदा हुआ और सारी मिलकियत उनकी है। वह होते हैं हद के ग्राहक, यह है बेहद का भोलानाथ। बेहद के बच्चों का ग्राहक। बाप कहते हैं - मैं परमधाम से आया हूँ। पुराना सब कुछ तुमसे लेकर नई दुनिया में तुमको सब कुछ देता हूँ इसलिए दाता कहा जाता है। दाता भी इन जैसा और कोई नहीं। निष्काम सेवा करते हैं। बाप कहते हैं - मैं निष्कामी हूँ। मेरे को कोई भी लालसा नहीं। ऐसे तो नहीं कहता हूँ कि "बच्चों का काम है - बूढ़े बाप की सम्भाल करना क्योंकि हमने तुम्हारी सम्भाल की है।" नहीं, यह

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

कायदा होता है - बाप बूढ़ा हो तो बच्चे उनकी सम्भाल करें। यह बाप तो कभी बूढ़ा होता नहीं, सदैव जवान है। आत्मा कभी बूढ़ी नहीं होती। यह तो जानते हो लौकिक बाप बच्चों में उम्मीद रखते हैं कि हम बूढ़ा होगा तो बच्चे हमारी सेवा करेंगे। भल सब कुछ बच्चों को देते हैं फिर भी सेवा तो होती है। यह शिवबाबा कहते हैं मैं हूँ ही अभोक्ता। मैं कभी खाता ही नहीं हूँ। मैं आता ही हूँ सिर्फ बच्चों को नॉलेज देने। सुप्रीम रूह, रूहों को बैठ समझाते हैं। रूह ही सुनती है, हर एक बात रूह करती है। संस्कार भी रूह ले जाती है जिसके आधार पर शरीर मिलता है। यहाँ मनुष्यों की अनेक मतें हैं। कोई कहते हैं रूह परमात्मा ही ठहरा। उनको कुछ भी लेप-छेप नहीं लगता है। आत्मा निर्लेप कह देते हैं। अगर आत्मा निर्लेप होती तो क्यों कहते पाप आत्मा, पुण्य आत्मा।

Simple Logic

अगर आत्मा निर्लेप है तो कहा जाए - पाप शरीर पुण्य शरीर।

31-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

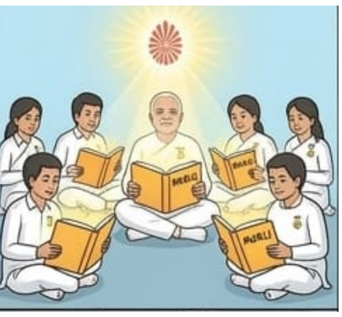

अभी तुम जानते हो कि सभी आत्माओं का रूहानी बाप हम रूहों को पढ़ा रहे हैं, इस शरीर द्वारा। आत्मा को बुलाते भी हैं ना। कहते हैं हमारे बाप की आत्मा आई, टेस्ट ली। आत्मा ही टेस्ट लेती है। बाप तो ऐसा नहीं कहेंगे। वो तो अभोक्ता है। ब्राह्मणों को खिलाते हैं, आत्मा आती है। कहाँ तो विराजमान होती होगी। ब्राह्मणों आदि को खिलाना भारत में कॉमन बात है। आत्मा को बुलाते हैं, उनसे पूछते हैं फिर कई बातें उनकी सच्ची भी निकलती हैं। यह पित्र आदि खिलाना - यह भी ड्रामा में नूँध है। इसमें कोई वन्डर नहीं खाना चाहिए। बाप नटशेल में ड्रामा के राज़ को बताते हैं। डिटेल तो इतनी ड्रामा की समझानी दे नहीं सकते। एक-एक की समझानी में ही वर्ष लग जायें। तुम बच्चों को बड़ी सहज शिक्षा मिलती है। गाते भी हैं हे पतित-पावन आओ, आकर हमको पावन बनाओ। उनका नाम ही है पतित-पावन। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को पतित-पावन नहीं कह सकते हैं। बाप को ही पतित-पावन, लिबरेटर कहते हैं। दु:ख हर्ता, सुख कर्ता भी उनको ही कहा जाता

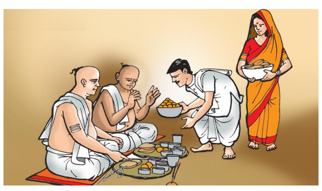

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Most imp

31-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

है। वह है निराकार। शिव के मन्दिर में जाकर देखो वहाँ लिंग रखा है। जरूर चैतन्य था तब तो पूजा करते हैं। यह देवता भी कभी चैतन्य थे तब तो उन्हों की महिमा है।

Example

नेहरू चैतन्य में था तब तो उनका फोटो निकाल महिमा करते हैं। कोई अच्छा काम करके जाते हैं तो उनका जड़ चित्र बनाए महिमा करते हैं। पवित्र की ही पूजा करते हैं। कोई भी मनुष्य की पूजा नहीं कर सकते। विकार से पैदा होते हैं ना तो उनकी पूजा नहीं हो सकती।

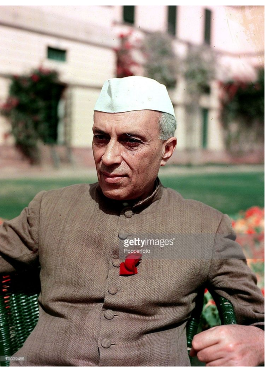

ये पक्का समझ लो..

पूजा देवताओं की होती है, जो सदैव पवित्र होते हैं। तुम जानते हो बाप आया था फिर अब संगम पर आया है - स्वर्ग की स्थापना करने। फिर द्वापर से रावण राज्य शुरू होगा। रावण राज्य शुरू होने से झट शिव का मन्दिर बनाते हैं। अभी तो चैतन्य में नॉलेज सुना रहे हैं। वह सत है, चैतन्य है। उनकी ही महिमा गाते हैं - निराकार को शरीर तो चाहिए ना। तो बाप ही आकर विश्व को हेविन बनाते हैं, उस हेविन में राज्य करने के लिए तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। स्वर्गवासी तुम बन रहे हो। निराकार परमपिता परमात्मा ज्ञान का सागर है। परन्तु

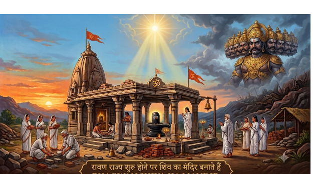

सुनाये कैसे? कहते हैं मैं इस शरीर में आया हूँ, मेरा ड्रामा में यह पार्ट है। मैं प्रकृति का आधार लेता हूँ। यह जो पहले नम्बर का है इनके ही बहुत जन्मों के अन्त में मैं आकर प्रवेश करता हूँ और इनका नाम ब्रह्मा रखता हूँ। पहले यह सब भट्ठी में थे तो बहुतों को नाम दिये थे। परन्तु बहुतों ने फिर छोड़ दिया इसलिए नाम रखने से क्या फायदा? तुम वह नाम देखो तो वन्डर खाओ। एक ही साथ सब इकट्ठे कितने रमणीक नाम आये। सन्देशी नाम ले आती थी। वह लिस्ट भी जरूर रखनी चाहिए। संन्यासी भी जब संन्यास करते हैं तो उनका भी नाम बदल जाता है। घरबार छोड़ देते हैं। तुम छोड़ते नहीं हो। तुम ब्रह्मा के आकर बनते हो। शिव के तो हो ही। तुम कहते ही हो बापदादा। संन्यासियों का ऐसे नहीं होता है। भल नाम बदलते हैं परन्तु बापदादा नहीं मिलता। उनको सिर्फ गुरू मिलता है। हठयोगी हद के संन्यासी और राजयोगी बेहद के संन्यासी में रात दिन का फ़र्क है। गाया भी जाता है ज्ञान, भक्ति और वैराग्य। उनको भी वैराग्य है। परन्तु उनका है घरबार से वैराग्य। तुमको सारी

चढ़ाओ नशा... How lucky and Great we are...!

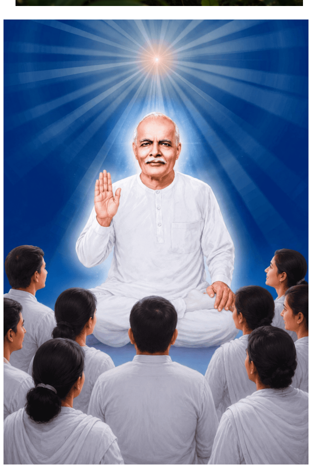

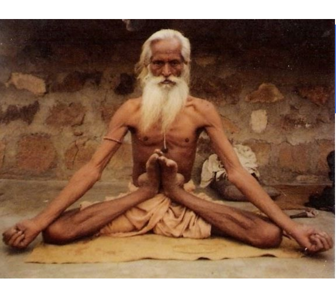

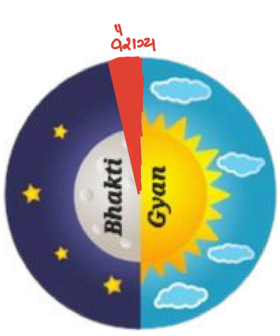

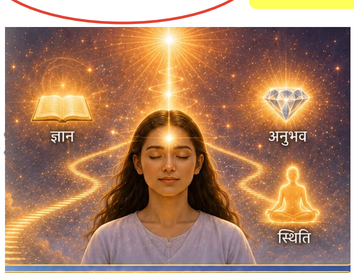

दुनिया से वैराग्य है। उनको पता ही नहीं कि सृष्टि बदलती है। तुम्हारा है बेहद का वैराग्य। यह सृष्टि खलास होनी है। तुम्हारे लिए नई दुनिया बन रही है। वहाँ जाना है परन्तु ये पक्का समझ लो.. पावन होने बिगर तो वहाँ जा नहीं सकते। दिल में जंचता है बरोबर नई दुनिया में देवी-देवताओं का राज्य था, जो बाप अब स्थापन करते हैं। तुम जानते हो शिवबाबा को याद करने से हम पुण्य आत्मा बन जायेंगे। है बड़ा सहज, परन्तु याद भूल जाती है। भक्ति मार्ग की रसम रिवाज बिल्कुल ही अलग है। वापिस अपने घर तो कोई जा नहीं सकता। पुनर्जन्म सबको जरूर लेना है। घर जाने का समय एक ही है।

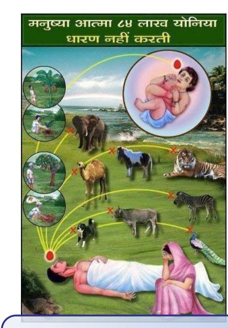

Point to be Noted

"फलाना मोक्ष को प्राप्त हुआ," यह तो गपोड़ा है। बाप कहते हैं - No one Means No one... कोई भी आत्मा बीच से वापिस नहीं जा सकती। नहीं तो सारा खेल बिगड़ जाये। हर एक को सतो रजो तमो में जरूर आना है। मोक्ष के लिए तो बहुत आते हैं, समझाया जाता है मोक्ष होता नहीं। यह तो अनादि बना बनाया ड्रामा है। वह कभी बदली नहीं हो सकता। मक्खी यहाँ से पास हुई फिर 5 हजार वर्ष बाद ऐसे ही पास

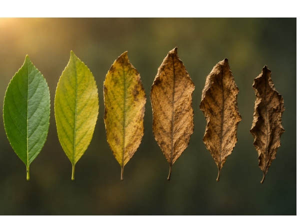

होगी। यह तो जानते हैं बाबा कितना भोला है। पतित-पावन बाप अपने परमधाम से आते हैं - पार्ट बजाने। वही समझाते हैं यह ड्रामा कैसे बना हुआ है, इसमें मुख्य कौन-कौन हैं। जैसे कहते हैं ना कि सबसे साहूकार कौन हैं - इस दुनिया में? उसमें नम्बरवार नाम निकालते हैं। तुम जानते हो, सबसे साहूकार कौन है? वह कहेंगे अमेरिका। परन्तु तुम जानते हो स्वर्ग में सबसे साहूकार यह लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। तुम पुरुषार्थ करते हो भविष्य के लिए, सबसे बड़ा साहूकार बनने के लिए। यह रेस है। इन लक्ष्मी-नारायण जैसा साहूकार कोई होगा? अल्लाह अवलदीन की भी स्टोरी बनाते हैं। ठका करने से कुबेर का खजाना निकल गया। बहुत किसम-किसम के नाटक बनाते हैं।

अभी तुम्हारी बुद्धि में है - यह शरीर छोड़ स्वर्ग में जायेंगे। हमको कारून का खजाना मिलेगा। बाप कहते हैं - मुझे याद करने से माया एकदम भाग

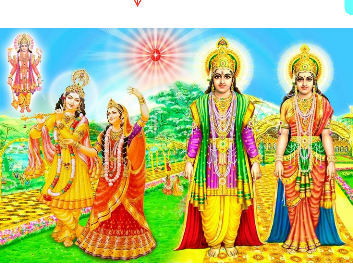

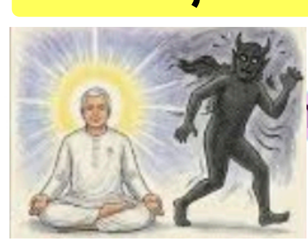

जायेगी। बाप को याद नहीं करते तो माया फिर तंग करती है। कहते हैं बाबा हमको माया के तूफान बहुत आते हैं। अच्छा बाप को बहुत प्यार से याद करो तो तूफान उड़ जायेंगे। बाकी नाटक आदि बैठ बनाये हैं। बात है कुछ भी नहीं। बाप कितना सहज बताते हैं - सिर्फ बाप को याद करो तो तुम्हारे में जो अलाए है वह निकल जायेगी और कोई तकलीफ नहीं देते हैं। आत्मा जो पवित्र सच्चा सोना थी, वह अब झूठी बन गई है फिर सच्ची बनेगी - इस याद अग्नि से। आग में डालने बिगर सोना पवित्र हो न सके तो इसको भी योग अग्नि कहते हैं। है याद की बात। वो लोग तो अनेक प्रकार के हठयोग सिखलाते हैं। तुमको तो बाप कहते हैं - उठते बैठते याद करो। आसन आदि कहाँ तक तुम लगायेंगे। यह तो चलते फिरते काम करते याद में रहना है। भल बीमार हो तो यहाँ लेटकर भी बाप को याद कर सकते हो। शिवबाबा को याद करो और चक्र फिराओ, बस। उन्होंने फिर लिखा है गंगा का तट हो, अमृत मुख में हो। गंगा के किनारे तो गंगाजल ही मिलता है, इसलिए

Words of world Almighty Authority

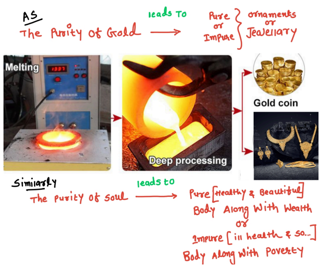

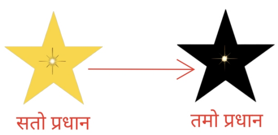

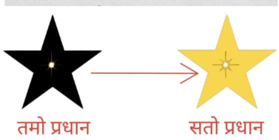

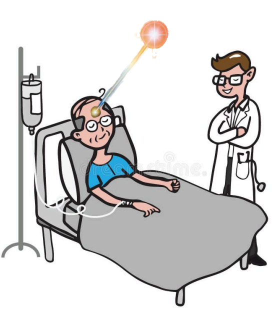

इतना तो करना स्वामी,
जब प्राण तन से निकले
गोविन्द नाम लेकर,
फिर प्राण तन से निकले ॥

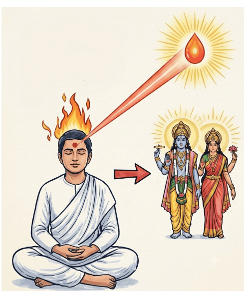

मनुष्य हरिद्वार में जाकर बैठते हैं। बाप तो कहते हैं तुम कहाँ भी बैठो, भल बीमार हो सिर्फ बाप को याद करो। स्वदर्शन चक्र फिराते रहो तब प्राण तन से निकलें। यह प्रैक्टिस करनी पड़े। उस भक्ति मार्ग की बातों में और इस ज्ञान मार्ग की बातों में कितना रात दिन का फर्क है। बाप की याद से तुम स्वर्ग के मालिक बन जायेंगे। वह तो लड़ाई वालों को कहते हैं - जो युद्ध के मैदान में मरेगा वह स्वर्ग में जायेगा। वास्तव में युद्ध यही है। उन्होंने कौरवों, पाण्डवों का लश्कर दिखाया है। महाभारत लड़ाई हुई फिर क्या हुआ? रिजल्ट कुछ भी नहीं। बिल्कुल ही घोर अन्धियारा है, कुछ भी समझते नहीं इसलिए अज्ञान अन्धियारा कहा जाता है। बाप फिर रोशनी करने आया है। उनको ज्ञान का सागर, नॉलेजफुल कहा जाता है। अभी तुमको भी सारा ज्ञान मिला है। वह है मूलवतन, जहाँ तुम आत्मायें रहती हो उनको ब्रह्माण्ड भी कहा जाता है। यहाँ रूद्र यज्ञ रचते हैं तो बाप के साथ-साथ तुम आत्माओं की भी पूजा करते हैं क्योंकि तुम बहुतों का कल्याण करते हो। बाप के साथ तुम

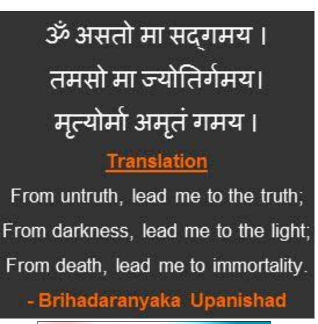

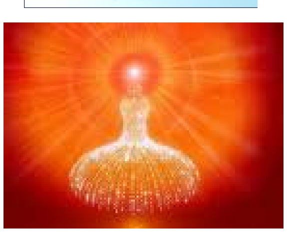

योग धारणा सेवा M.imp.

चढ़ाओ नशा...

31-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

भारत की खास और दुनिया की आम रूहानी सेवा करते हो इसलिए बाप के साथ तुम बच्चों का भी पूजन होता है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

बाप को बहुत-बहुत प्यार से याद करना है।

धारणा सेवा M.imp.

31-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

धारणा के लिए मुख्य सार:-

नैनो से बहते अश्कों के धारों में
हमने तुझको देखा चाँद सितारों में
बिरहा की अग्नि में पल-पल तपती है
अब तो सांसें तेरी माला जपती हैं
तेरे लिए, तेरे लिए
तेरे लिए, इस दुनिया का हर सितम है गवारा सनम

तेरे नाम हम ने किया है
जीवन अपना सारा सनम

Click

Infinitely most Imp.

1) माया के तूफानों को भगाने के लिए बाप को बहुत-बहुत प्यार से याद करना है। आत्मा को योग अग्नि से सच्चा-सच्चा सोना बनाना है।

2) बेहद का वैरागी बन इस पुरानी दुनिया को भूल जाना है। दुनिया बदल रही है, नई दुनिया में जाना है इसलिए इससे संन्यास ले लेना है।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

31-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान: कदम-कदम पर सावधानी रखते हुए पदमों की कमाई जमा करने वाले पदमपति भव

God says: May I have your Attention Please..!

बाप बच्चों को बहुत ऊंची स्टेज पर रहने की सावधानी दे रहे हैं इसलिए अभी जरा भी गफलत करने का समय नहीं है, अब तो कदम-कदम पर सावधानी रखते हुए, कदम में पदमों की कमाई करते पदमपति बनो।

Take it Seriously..

जैसे नाम है पदमापदम भाग्यशाली, ऐसे कर्म भी हों। एक कदम भी पदम की कमाई के बिगर न जाए।

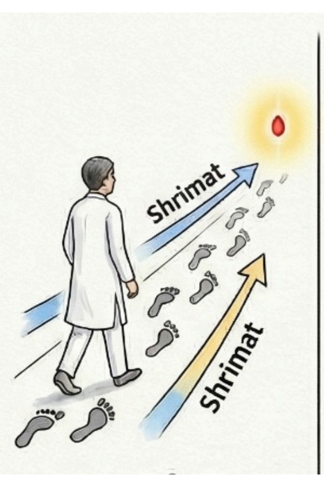

Attention..!

तो बहुत सोच-समझकर श्रीमत प्रमाण हर कदम उठाओ। श्रीमत में मनमत मिक्स नहीं करो।

m.m.m....imp.

स्लोगन:- मन को आर्डर प्रमाण चलाओ तो मन्मनाभव की स्थिति स्वत: रहेगी।

ज्ञान योग

सेवा M.imp.

31-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

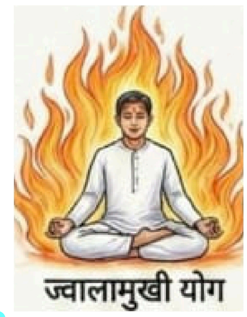

ये अव्यक्त इशारे -

ज्वालास्वरूप स्थिति में रह शक्तिशाली याद का अनुभव करो

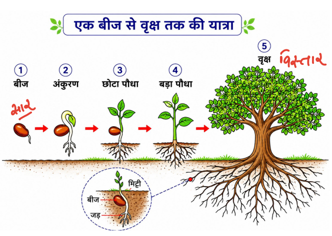

याद को शक्तिशाली बनाने के लिए विस्तार में जाते सार की स्थिति का अभ्यास कम न हो, विस्तार में सार भूल न जाये।

m.m.m....imp.

खाओ-पियो, सेवा करो लेकिन न्यारेपन को नहीं भूलो।

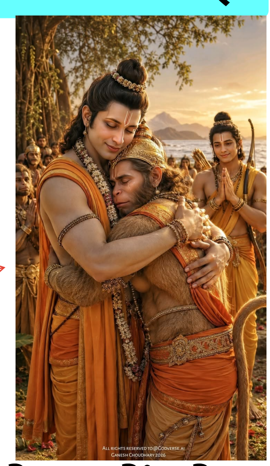

Definition of

साधना अर्थात् शक्तिशाली याद।

निरन्तर बाप के साथ दिल का सम्बन्ध।

Mind very well...

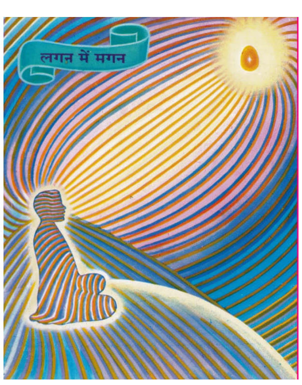

साधना इसको नहीं कहते कि सिर्फ योग में बैठ गये लेकिन जैसे शरीर से बैठते हो वैसे दिल, मन, बुद्धि एक बाप की तरफ बाप के साथ-साथ बैठ जाए। ऐसी एकाग्रता ही ज्वाला को प्रज्जवलित करेगी।

Points: योग

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans जून 26 → Click

All अव्यक्त इशारे जून 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

अमृतवेला और सूक्ष्म सेवा

अमृतवेला

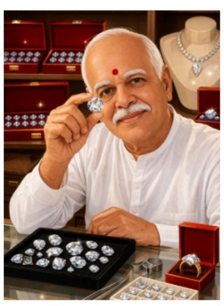

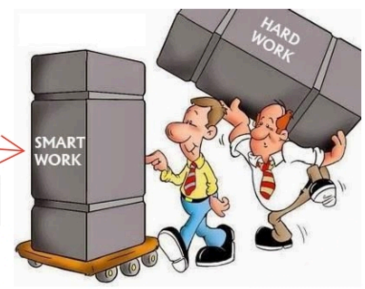

11.5 रोज़ अपने सम्पर्क वाली आत्माओं पर संकल्प द्वारा नज़र दौड़ाओ :

संकल्पों द्वारा ईश्वरीय सेवा करना — यह भी सेवा का श्रेष्ठ और नया तरीका है। जैसे जवाहरी होता है तो रोज़ सुबह को दुकान खोलते ही अपने हर रत्न को चैक करता कि साफ़ हैं, चमक ठीक है, ठीक जगह पर रखे हुए हैं, वैसे **रोज़ अमृतवेले अपने सम्पर्क में आने वाली आत्माओं पर संकल्प द्वारा नज़र दौड़ाओ।** जितना आप उन्हों को संकल्प से याद करेंगे, उतना वह संकल्प उन्हों के पास पहुँचेगा और वह कहेंगे कि हमने भी बहुत वारी आपको याद किया था। इस प्रकार सेवा के नये-नये तरीके अपनाते आगे बढ़ते जाओ। हर मास सम्पर्क वाली आत्माओं का विशेष कोई प्रोग्राम रखो, स्नेह मिलन रखो, अनुभव की लेन-देन वा मनोरंजन का प्रोग्राम रखो। किसी-न-किसी तरह से बुलाकर सम्पर्क बढ़ाओ। यह नहीं सोचो कि दो निकले या तीन निकले। एक भी निकले तो भी अच्छा, एक ही दीपक दीपमाला तैयार कर देगा।

← most optimistic Approach of sweet बाबा